मिल रही हैं नई-नई वनस्पतियां

डॉ. ओ.पी. जोशी

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण एवं प्राकृतिक आवास की समाप्ति के कारण वनस्पतियों का विलुप्तीकरण जारी है। परन्तु विलुप्तीकरण के साथ-साथ कुछ नई वनस्पतियां भी प्राप्त हो रही हैं एवं कुछ वे वनस्पतियां भी मिली हैं जिन्हें विलुप्त मान लिया गया था। इस लेख में ऐसी ही कुछ वनस्पतियों के सम्बंध में बताया गया है जिन्हें पिछले चार-पांच वर्षों में खोजा गया हैं।

ब्रिटेन के वनस्पति शास्त्री प्रो. स्टीवर्ट मेकफर्सन तथा साथियों ने फिलीपाइन्स के विक्टोरिया पहाड़ पर एक बड़े मांसाहारी पौधे की खोज की है। चार फीट से ज़्यादा ऊंचाई वाला यह पौधा पिचर-परिवार का सदस्य है। ब्रिटेन के ही प्रकृति प्रेमी डेविड एटनबरो के सम्मान में इसका नाम *नेपेंथीस एटनबरोई* रखा गया है। दक्षिण पूर्वी एशिया में लगभग तीन वर्ष तक चले इस अभियान में मेकफर्सन व उनके साथियों ने वनस्पतियों की तेरह नई प्रजातियां खोजी जिनमें *नेपेंथीस एटनबरोई* एक है। इस अभियान में गुलाबी फर्न के पौधे एवं नीले रंग के मशरूम भी खोजे गए थे।

दक्षिण कम्बोडिया में लगभग 22 फीट लम्बाई वाला पिचर प्लांट - *नेपेंथीस बोकोरेंसिस* भी देखा गया।

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण ने वर्ष 2008 में बताया था कि देश के वैज्ञानिकों को विभिन्न पौधों की 167 प्रजातियां मिली हैं। इनमें बांस व दालचीनी की दो एवं अदरक की तीन नई प्रजातियां थी। जौं की विलुप्त मानी जाने वाली एक जंगली प्रजाति पिथोरागढ़ के वन विभाग के अधिकारियों ने खोजी। ज़िला मुख्यालय से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ध्वज नामक स्थान पर ये पौधे देखे गए। जौं की इस जंगली प्रजाति को सर्वप्रथम प्रसिद्ध वनस्पतिज्ञ जे.एफ. दताई ने 1894 में टिहरी के जंगलों में खोजा था। इसका एक नमूना रायल बॉटेनिकल गार्डन, क्यू, लंदन में 1895 में रखा गया था। लगभग 115 वर्ष बाद इसे फिर देखा गया है। संकरण के द्वारा जौं की नई प्रजातियां बनाने में यह उपयोगी होगी।

इसी प्रकार, रीवा के जंगलों में सोमवल्ली का पौधा भी वन विभाग के अधिकारियों द्वारा देखा गया। प्राचीन ग्रंथों में बताया गया है कि इस पौधे से शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है। इसे सम्हालकर नर्सरी में लगाया गया है। वनस्पति शास्त्र में इसे *सार्कोस्टेमा ब्रेविस्टेग्मा* कहते हैं।

विलुप्ति की ओर अग्रसर दो दुर्लभ प्रजातियां पचमढ़ी में पाई गई। इनके नाम है *फायकस कुपुलेटा* व *एल्सोफीला बालकृष्णानी*। होशंगाबाद के नर्मदा कॉलेज के वनस्पतिज्ञों तथा वन विभाग के अधिकारियों ने इन्हें मटकुली व पनारपानी के मध्य स्थित पहाड़ों पर खोजा है। वर्ष 1912 में अंग्रेज़ वैज्ञानिक हेंस ने फायकस कुपुलेटा का पौधा पचमढ़ी के

रोरीघाट क्षेत्र में देखा था। भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों ने अस्सी के दशक में इसका दूसरा पौधा देखा लेकिन बाद में यह कहीं नहीं देखा गया।

दुर्लभ मानी जाने वाली गुलमोहर की एक प्रजाति के दो पेड़ नासिक के करीब नेशनल हाइवे क्रमांक 3 के पास देखे गए। इस वनस्पति वैज्ञानिक नाम *कॉलविली रेसीमोसा* है। यह मेडागास्कर का मूल निवासी है। इसके कुछ वृक्ष मुम्बई के जीजामाता उद्यान तथा कोलकाता के वानस्पतिक उद्यान में भी हैं। मॉरीशस के गर्वनर चार्ल्स कोलविल के नाम पर इसका नाम कोलविलास रखा गया था।

लगभग 115 वर्ष के बाद अरुणाचल के सुबानसिरी ज़िले के लिंगू गांव में *ब्रिगोनिया टेसारीकार्पा* के चार पौधे भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों ने खोजे। पिछली बार इस प्रजाति के पौधे 1890 में देखे गए थे। प्रसिद्ध वनस्पतिज्ञ सी.पी. क्लार्क ने इस पौधे का वर्णन 1879 में किया था। बारापानी के वानस्पतिक उद्यान में इसके नमूने लगाए गए जहां उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के कई पौधों को संरक्षित किया जा रहा है। यह पौधा अरुणाचल में स्थानबद्ध (एंडेमिक) प्रजाति है।

बिहार के कटिहार ज़िले में दुर्लभ कुकरबीट्स के पौधे देखे गए। मिर्चीबाड़ी के पास जंगलों में 185 पौधे फैले थे। बिहार के ही पूर्णिया ज़िले में सर्वप्रथम एच.एच. हैंस द्वारा ये पौधे खोजे गए थे परन्तु बाद में लम्बे समय तक इन्हें नहीं देखा गया। इसे स्थानीय भाषा में बिंडोल कहते हैं जो मधुमेह के उपचार में भी उपयोगी है। इस पौधे के बीज भागलपुर वि.वि. के वनस्पति उद्यान में लगाए गए हैं। इन चंद उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि विलुप्तीकरण के इस दौर में भी वनस्पतियों का मिलना जारी है। वैसे विलुप्तीकरण एक प्राकृतिक प्रक्रिया है परन्तु वर्तमान में मानवीय गतिविधियों से यह तेज़ हो गई है। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन	:	भोपाल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	(सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017
मुद्रक का नाम	:	(सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017सम्पादक का
नाम	:	सुशील जोशी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	(सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य, ई-10 शंकर नगर बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462 017

मैं सी.एन. सुब्रह्मण्यम, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई 2011

सी.एन. सुब्रह्मण्यम,
निदेशक, एकलव्य